बोर्ड उत्तरपत्रिका : मार्च - 2022

हिंदी लोकभारती

प्र.1. (अ)

विभाग 1 – गद्य

1. i. इन्हें मरीज से कोई हमदर्दी नहीं होती है।

ii. ये सिर्फ सूरत दिखाने आते हैं।

2.

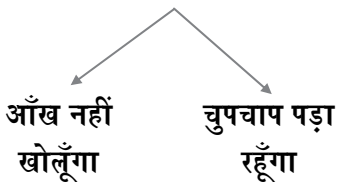

3. i. 1. थोड़ी-बहुत
2. धीरे-धीरे

ii. वचन परिवर्तन लिंग परिवर्तन

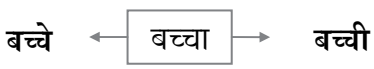

4. मरीज से मिलने का समय निश्चित होता है। अत: निश्चित समय पता करके ही मिलने जाना चाहिए। अपने सामर्थ्य के अनुसार फल व स्वास्थ्यवर्धक खाद्य सामग्री तथा कुछ पैसे भी साथ में लेकर जाने चाहिए। हमेशा ध्यान रखें कि बच्चों को साथ न ले जाएँ। यदि कोई विकल्प नहीं तो बच्चों को ले जाने पर भी मरीज से उन्हें दूर रखें। इससे संक्रमण होने की आशंका नहीं रहती और बच्चों की शरारत से मरीज को भी नुकसान नहीं होता। मरीज से आवश्यक बातें ही करनी चाहिए। आवाज ऊँची न हो और उसमें विनम्रता होनी चाहिए। डॉक्टर, वॉर्ड बॉय, नर्स व अस्पताल के कर्मचारियों के कार्य में कोई बाधा न हो, इस बात का खयाल रखें। इस प्रकार सामाजिक शिष्टाचार और अनुशासन का पालन करते हुए हमें मरीज से मिलने जाना चाहिए।

1. i.

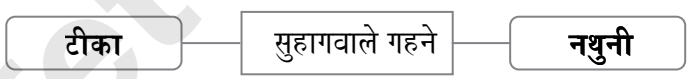

ii.

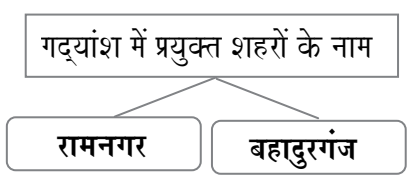

2. i. पाँच ग्राम सोने के गहने आना।

ii. विदा होकर रामनगर आना।

iii. मुँह दिखाई में गहने मिलना।

iv. बाबू जी अपनी पीड़ा न रोक सके।

3. i. रिश्ते

ii. दिन

iii. शादियाँ

iv. मुसीबतें

Target Publications

4. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अपने परिवार के साथ अपना जीवन बिताता है। परिवार का व्यक्ति के जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। यदि परिवार के सभी सदस्य सुख-दुख में एक-दूसरे का साथ देते हैं, तो जीवन बहुत आनंद से गुजरता है। कभी कोई संकट आया, तो सभी मिलकर उससे बड़ी आसानी से निपट लेते हैं। परिवार से व्यक्ति का साहस बढ़ता है और वह उसकी मदद से आगे बढ़ता जाता है। इसी कारण ऐसा कहा जाता है कि पारिवारिक सुख-दुख में प्रत्येक का सहभाग होना चाहिए।

प्र.1. (इ)

1.

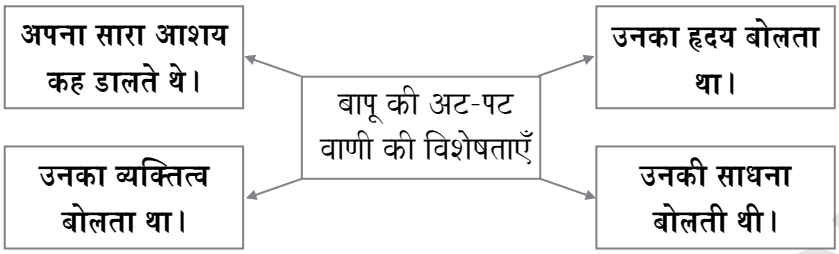

2. वाणी का हमारे जीवन में बहुत अधिक महत्त्व है। वाणी यदि मधुर हो तो मुश्किल कार्य भी बड़ी आसानी से हो जाते हैं। मधुर वाणी बोलने वाले व्यक्ति का सभी सम्मान करते हैं। मधुर वाणी का प्रयोग करने वाले व्यक्ति के बहुत सारे दोस्त होते हैं। जो लोग तीखी वाणी का प्रयोग करते हैं, उन्हें जीवन में बहुत कष्ट झेलने पड़ते हैं। ऐसे लोगों की मदद करने के लिए भी कोई तैयार नहीं होता है। वे जीवन में अकेले पड़ जाते हैं। अत: हमेशा मधुर वाणी का प्रयोग करना चाहिए।

प्र.2. (अ)

विभाग 2 – पद्य

1. i. जलद (बादल) ii. नदी
iii. तलावा (तालाब) iv. समुद्र (जलनिधि)

2. i. गगन → **नभ** ii. पर्वत → **गिरि**
iii. बिजली → **दामिनि** iv. दुष्ट → **खल**

3. छोटी-छोटी नदियाँ अधिक वर्षा के कारण भरकर बहने लगी हैं। उन्होंने अपने किनारों को ठीक उसी भाँति तोड़ दिया है, जैसे दुष्ट लोग थोड़ा धन पाने के बाद अभिमानी होकर अपनी सीमाओं का ध्यान नहीं देते हैं। यहाँ बारिश का जल जमीन पर गिरते ही उसी तरह मटमैला अर्थात गंदा हो गया है, जैसे क्षुद्र जीव माया अर्थात लालच के फँदे में पड़कर मलिनता को धारण कर लेता है।
जल एकत्र होकर तालाबों में उसी तरह भर रहा है, जैसे सद्‌गुण एक-एक कर अपने आप सज्जन व्यक्ति के पास चले आते हैं। नदी का जल समुद्र में जाकर वैसे ही स्थिर हो जाता है, जैसे जीव हरि अर्थात ईश्वर को पाकर अचलता अर्थात मुक्ति को प्राप्त कर लेता है।

प्र.2. (आ)

1.

अ	आ
हृदय	तेज
भुजा	शक्ति
संचय	दान
अतिथि	देव

2. i.

उपसर्गयुक्त		प्रत्ययुक्त
विनम्र	नम्र	**नम्रता**

Target Publications

ii. 1. ज्ञान 2. देव

3. कवि कहता है कि हम भारतवासियों का चरित्र हमेशा से ही पवित्र रहा है। हमारी भुजाओं में शक्ति का संचार होता है और विनम्रता हमारा गहना है। भारतवासी होने के नाते हम सदैव गौरवान्वित रहते हैं। हम किसी को दुख में नहीं देख सकते हैं।
संचय करना भारतवासियों की एक विशेषता है, लेकिन उस संचय का उद्देश्य दान होता है। अतिथि का हम देवता की भाँति सम्मान करते हैं। हम सदैव सत्य बोलते हैं और आज भी हमारी प्रतिज्ञा में पहले की भाँति वही दृढ़ता व तेज है।

प्र.3. (अ)

विभाग 3 – पूरक पठन

1. i. मुखराम ii. शहनाई
iii. मसालेदार तरकारी iv. मेहमान

2. समय हमेशा बदलता रहता है। इसी समय के साथ हमारी सांस्कृतिक परंपराओं का भी स्वरूप बदल गया है और लगातार बदलता ही जा रहा है। पहले शादी-विवाह, जन्मोत्सव, दीपावली, होली आदि उत्सवों के आने के लगभग एक माह पहले से ही घर में तैयारियाँ शुरू हो जाती थीं। जिसके घर कोई आयोजन होता था, वहाँ लोगों का मेला लग जाता था। आज ऐसा नहीं है। आज के इस आधुनिक युग में हमारे पास समय का अभाव हो गया है। परंपराओं के महत्त्व को हम भूलने लगे हैं। हम उसे सिर्फ औपचारिकता की तरह निभा रहे हैं। इससे परंपराओं की आत्मा मरती जा रही है। इन परंपराओं के पीछे जो एक-दूसरे को साथ लाना, लोगों में आपसी प्रेम संबंध स्थापित करने का उद्देश्य था, वह खत्म होता जा रहा है। आज हमें अपनी सांस्कृतिक परंपराओं के संवर्धन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

प्र.3. (आ)

1. i. मँझधार में क्या डोल रही है ?
ii. अपने साथ रंग लेकर कौन आया है ?

2. जीवन में अगले पल क्या होनेवाला है, इसका ज्ञान किसी को नहीं है। यह एक अनजान पहेली की तरह है। इसमें सुख और दुख का क्रम लगातार चलता रहता है। इस जीवन में आसानी से कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता है। हिम्मत और लगातार कोशिश के बाद ही मंजिल तक पहुँचा जा सकता है। जो जितना अधिक संघर्ष करेगा, उसे उतनी अधिक सफलता मिलेगी। इसी कारण ऐसा कहा जाता है कि जीवन एक संघर्ष है।

प्र.4.

विभाग 4 – भाषा अध्ययन (व्याकरण)

1. उसे - सर्वनाम

2. i. राम भाग गया क्योंकि वह डर गया था।
ii. सीता का घर पास था। } **दो में से कोई एक**

3.

शब्द	संधि-विच्छेद	संधिभेद
परार्थ	परा + अर्थ	**स्वर संधि**
अथवा		
सदाचार	**सत् + आचार**	**व्यंजन संधि**

} **दो में से कोई एक**

Target Publications

4.

	सहायक क्रिया	मूल क्रिया
(i)	दी	देना
(ii)	चुका	चुकना

} दो में से कोई एक

5.

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) देखना	दिखाना	दिखवाना
(ii) भूलना	भुलाना	भुलवाना

} दो में से कोई एक

6.

मुहावरा	अर्थ	वाक्य
(i) दाद देना	प्रशंसा करना	राहुल ने अपने मित्र शिवम की ईमानदारी की दाद दी।
(ii) मुँह लाल होना	क्रोधित होना	राहुल की बातें सुनकर सुनील का मुँह लाल हो गया।

दो में से कोई एक

अथवा

सार्वजनिक अस्पताल का खयाल आते ही मैं काँप उठा।

7.

	कारक चिह्न	कारक भेद
(i)	की	संबंध कारक
(ii)	से	करण कारक

} दो में से कोई एक

8. "ओह! कंबख्त ने कितनी बेदर्दी से पीटा है।"

9 i. मेरी सबसे छोटी बहन पहली बार ससुराल जा रही थी।
ii. प्राण को मन से अलग करना पड़ेगा।
iii. इसने मुझे बहुत प्रभावित किया है।

} तीन में से कोई दो

10. i. मिश्र वाक्य
ii. 1. लिखने से पहले तो मैंने पढ़ना शुरू नहीं किया था।
2. लोग पहाड़ों पर घूमने का शौक रखते हैं।

} दो में से कोई एक

11. i. पिताजी ने आंदोलनों में भाग लेने से रोका।
ii. यह पसीना किसलिए बहाया है?
iii. मैं ड्राइवर को बुला लाया।

} तीन में से कोई दो

प्र.5. (अ)

विभाग 5 – उपयोजित लेखन

1. **पत्रलेखन**

21 मार्च, 2022
मंगेश,
नंदनवन कॉलोनी,
सातारा।
mangesh@xyz.com

प्रिय अनुज,
आशीर्वाद।

Target Publications

मैं स्वस्थ व सकुशल हूँ और आशा करता हूँ कि तुम भी प्रसन्न व कुशल होगे। आज के दैनिक अखबार से यह जानकर गर्व से सीना फूल गया कि तुम्हें राज्यस्तरीय निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। पुरस्कार प्राप्त कर तुमने न केवल अपना, बल्कि अपने पूरे परिवार का मान बढ़ाया है। मुझे तुम्हारा बड़ा भाई होने पर सचमुच बहुत गर्व हो रहा है। तुम इसी तरह सदैव प्रगति के पथ पर गतिमान रहो व सफलता के नित नए आयाम छुओ। मेरी शुभकामनाएँ प्रतिपल तुम्हारे साथ हैं।

एक बार फिर तुम्हारी सफलता के लिए तुम्हें बधाई। पत्र लिखते रहना।

तुम्हारा भाई,
उमेश

उमेश,
205, नेहरू मार्ग,
पुणे।
umesh@xyz.com

अथवा

21 मार्च, 2022

प्रति,
माननीय व्यवस्थापक जी,
मीरा पुस्तक भंडार,
नेताजी मार्ग,
नासिक।
meerabook@xyz.com

महोदय,

मैं एक विद्यार्थी हूँ और मुझे हिंदी साहित्य की पुस्तकें पढ़ने का बहुत शौक है। अत: पिछले दिनों जब मुझे कुछ नई पुस्तकें पढ़ने का मन हुआ, तब मैंने अपने क्षेत्र के पुस्तकों की दुकानों पर पूछताछ की। दुख की बात यह है कि उनके पास ये पुस्तकें नहीं थीं। एक मित्र दुकानदार ने मुझे आपके प्रकाशन का पता दिया। मुझे पूरा विश्वास है कि मुझे जिन पुस्तकों की आवश्यकता है, वे आपके पास अवश्य ही उपलब्ध होंगी। कृपया निम्नलिखित पुस्तकों को उनकी प्रति संख्या के आधार पर भेजने का कष्ट करें। पत्र के साथ ही 600 रुपए का पोस्टल ऑर्डर भेज रहा हूँ। शेष राशि का भुगतान पुस्तकें मिलते ही तुरंत कर दिया जाएगा।

पुस्तक विवरण :

क्र.	पुस्तक का नाम	प्रति
1.	मानसरोवर भाग 1 - ले. प्रेमचंद	1
2.	चंद्रगुप्त (नाटक) - ले. जयशंकर प्रसाद	1
3.	अच्छे आदमी (कथा-संग्रह) - ले. फणीश्वरनाथ 'रेणु'	1

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप उचित छूट के साथ ही जल्द-से-जल्द पुस्तकें भेजने की कृपा करेंगे। उम्मीद है कि पुस्तकें फटी अथवा पुरानी नहीं होंगी।

धन्यवाद!

भवदीय,
शुभम

Target Publications

शुभम,
45, गणेश नगर,
जलगाँव।
shubham@xyz.com

2. i. सर सी. वी. वेंकटरमन को उनकी किस खोज के लिए जाना जाता है?
ii. सर सी. वी. वेंकटरमन को किस क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया?
iii. सर सी. वी. वेंकटरमन का जन्म किस राज्य में हुआ था?
iv. सर सी. वी. वेंकटरमन के पिता का क्या नाम था?

प्र.5. (आ)

1. **वृत्तांत-लेखन**

स्वच्छता अभियान संपन्न

औरंगाबाद। नेताजी विद्यालय में 1 मार्च, 2022 को सुबह आठ बजे 'स्वच्छता अभियान' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रमुख अतिथि के रूप में वरिष्ठ समाजसेवी जयशंकर सिंह सहित विद्यालय के सभी शिक्षकगण व विद्यार्थी मौजूद थे। कार्यक्रम के माध्यम से सभी को स्वच्छता के महत्त्व के प्रति जागरूक किया गया।

कार्यक्रम के दौरान अपने संबोधन में सिंह जी ने कहा,"अपने आस-पास स्वच्छता बनाए रखना हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है। यदि हम अपनी इस जिम्मेदारी से पीछे हटते हैं, तो हम स्वयं ही अपने लिए मुसीबत खड़ी कर देंगे। स्वच्छ वातावरण में जहाँ स्वास्थ्य फलता-फूलता है, वहीं गंदगी बीमारी का प्रकोप लेकर आती है। अपने पर्यावरण व आस-पास स्वच्छता बनाने के लिए हम सभी को एकसाथ आगे आना होगा।"

इस अवसर पर कुछ विद्यार्थियों ने मिलकर स्वच्छता के महत्त्व से संबंधित एक छोटा-सा कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में सभी ने विद्यालय व अपने घर के आस-पास के परिसर में स्वच्छता फैलाने की प्रतिज्ञा ली। इस अवसर पर पूरे विद्यालय में साफ-सफाई की गई और दोपहर 12 बजे कार्यक्रम का समापन हुआ।

अथवा

2. **कहानी-लेखन**

बुरी आदत

मोहन अपने माता-पिता का इकलौता बेटा था। मोहन का परिवार छोटा और सुखी था। मोहन पढ़ाई-लिखाई में बहुत आगे था। वह अपने माता-पिता और शिक्षकों का सम्मान करता था। उसके अंदर सारे गुण थे, बस एक ही अवगुण था। मोहन अपना खाली समय मोबाइल पर कुछ देखते व सुनते हुए बिताता था। वह अक्सर कान में इयरफोन डालकर गाना सुनते हुए कोई भी कार्य करता था। मोहन के माता-पिता ने उसे सारा समय इयरफोन कान में डालकर घूमने से मना भी किया, लेकिन वह अपनी आदत नहीं छोड़ रहा था। उसके पिता ने एक दिन उससे कहा,"बेटा, इस तरह हमेशा इयरफोन कान में डालकर घूमने से तुम्हें आस-पास क्या हो रहा है, इसकी खबर नहीं होती है। घर के अंदर ठीक है, लेकिन घर के बाहर सड़क पर इयरफोन लगाकर मत जाया करो। यह आदत खतरनाक है।" मोहन ने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया।

एक दिन मोहन विद्यालय से घर वापस लौट रहा था। प्रतिदिन की तरह वह इयरफोन लगाकर अपनी मस्ती में सड़क पार कर रहा था। उसने सामने से आ रही गाड़ी पर ध्यान नहीं दिया। कान में इयरफोन होने के कारण उसे गाड़ी का हॉर्न भी नहीं सुनाई दिया। अंत में वह गाड़ी आकर उससे टकरा गई। लोगों ने मोहन को तुरंत अस्पताल में भर्ती कराया और उसके परिजनों को इसकी खबर की।

Target Publications

इस दुर्घटना में मोहन को ज्यादा चोट नहीं आई। वह जल्द ही ठीक होकर घर लौट आया, लेकिन उसे सबक मिल गया। उस घटना के बाद से मोहन ने कभी घर के बार इयरफोन का प्रयोग नहीं किया।

सीख : माता-पिता के सलाह अवश्य माननी चाहिए।

3. **विज्ञापन-लेखन**

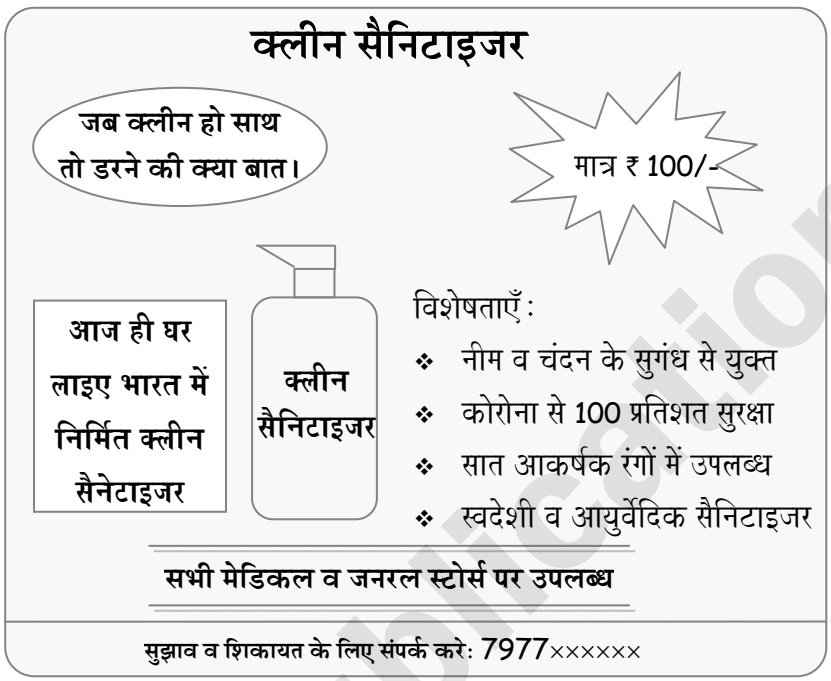

प्र. 5. (इ)

1. **मेरा प्रिय त्योहार**

हमारा भारत देश त्योहारों का देश है। यहाँ हर धर्म के अलग-अलग त्योहार हैं, परंतु ये सभी त्योहार सभी भारतवासी एक साथ मिलकर मनाते हैं। मैं भी संक्रांति, होली, बैसाखी, ईद, नवरात्रि, दीपावली, नाताल आदि त्योहार अपने परिवार, मित्रों व पड़ोसियों के साथ मिल-जुलकर मनाता हूँ। लेकिन इन सभी त्योहारों में से मेरा सबसे प्रिय त्योहार होली है। प्रति वर्ष आने वाला यह त्योहार भी बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है।

यह रंगों का त्योहार है और रंगबिरंगे रंगों को देखकर उदास मन भी प्रफुल्लित हो जाता है। होली के एक दिन पहले होलिका दहन किया जाता है। उसके दूसरे दिन रंगों की होली मनाई जाती है।

होली का त्योहार आने से पहले ही बाजारों से रंगबिरंगे रंग, पिचकारियाँ, गुब्बारे आदि की खरीददारी शुरू हो जाती है। मैं भी अपने माता-पिता के साथ बाजार जाकर अपनी पसंद के रंग और पिचकारी खरीदता हूँ। इस त्योहार का मजा और दुगुना करने के लिए माँ घर में तरह-तरह के पकवान बनाती है।

हमारी इमारत के मैदान में होली महोत्सव का आयोजन किया जाता है। होली के दिन इमारत के सभी लोग वहाँ एकत्रित होते हैं। सबसे पहले मैं बड़ों को रंग लगाकर उनसे आशीर्वाद लेता हूँ। फिर मैं अपने मित्रों को रंग लगाकर उन पर पानी व रंगों से भरे गुब्बारे फेंकता हूँ। वे भी मुझ पर रंगों की बौछार करते हैं। हम सभी एक दूसरे पर रंग डालकर इस त्योहार का आनंद उठाते हैं। चारों तरफ ढोल-नगाड़े बजाकर सभी झूमने लगते हैं। सभी एक-दूसरे को मिठाइयाँ खिलाकर गले लगते हैं। उत्साह से भरा होली का त्योहार आपसी नफरत मिटाकर लोगों में प्यार से रहने का संदेश देता है।

होली के त्योहार में सभी रंगों की हो भरमार,
ढेर सारी खुशियों से भरा हो सबका संसार।

Target Publications

2. **नदी की आत्मकथा**

मैं जीवन देने वाली हूँ। मेरा जन्म पर्वतों की गोद में हुआ और मैं वहाँ से निकलकर हर तरफ फैलती गई। मैं जहाँ भी जाती हूँ, खुशियाँ बाँटती जाती हूँ। मैं अनगिनत जीव-जंतुओं की जन्मदात्री और उनकी पालनकर्ता हूँ। भारतीय संस्कृति में मुझे माता का दर्जा प्राप्त है। मैं कोई और नहीं बल्कि कलकल बहती हुई नदी हूँ। मुझे सरिता, तटिनी, तरंगिणी, वाहिनी आदि नाम से भी जाना जाता है।

मेरा जन्म पर्वत की छोटी-बड़ी श्रंखलाओं के मध्य हुआ है। वहाँ से निकलकर मैं मैदानों में पहुँची। मेरे तटों पर मानवसभ्यताएँ फलती-फूलती हैं। कभी किसान की खेती में मैं उसकी सहायता करती हूँ, तो कभी बिजली के निर्माण में मैं महती भूमिका निभाती हूँ। धरती का जलस्तर बनाए रखने में मेरा बहुत बड़ा योगदान है। बरसात के बाद सभी जीवों के लिए पानी को मैं ही सुरक्षित रखती हूँ। इससे मनुष्य को वर्षभर पीने योग्य पानी प्राप्त होता है।

इंसान मुझे बहुत प्यार करता है और मैं भी इंसान से उतना ही प्यार करती हूँ। एक माता की तरह मैं उसके लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए हर पल तत्पर रहती हूँ। मुझे दुख इस बात का है कि समय के साथ ही मनुष्य का प्यार मुझसे कम होता जा रहा है। वह मुझे माता की तरह प्रेम अवश्य करता है, लेकिन मेरी देखभाल नहीं करता है। आज अपने स्वार्थ के लिए लोग मुझे गंदा करने लगे हैं। इसके परिणामस्वरूप मेरे भीतर रहने वाले अनेक जीवों पर संकट मँडराने लगा है।

लोगों की सेवा करना ही मेरा उद्देश्य है और यही सीख मैं इंसान को भी देती हूँ। इंसान की लापरवाही और स्वार्थी प्रवृत्ति मुझे अंदर-ही-अंदर बहुत दर्द देती है। मुझे आशा है कि मेरी यह दर्दभरी कहानी सुनकर इंसान मेरे उद्धार के बारे में अवश्य ध्यान देगा। इंसान से मेरी बस यही प्रार्थना है कि वह अपने हित के लिए मुझे साफ व सुरक्षित रखे।

3. **यदि मैं अध्यापक होता.....**

हमारे अवगुणों को गुणों में बदल देते हैं।
शिक्षक हमें एक सुनहरा कल देते हैं।

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो मनुष्य में ज्ञान का विस्तार करती है। यही ज्ञान उस व्यक्ति के विकास के साथ-साथ पूरे देश के विकास में सहायक सिद्ध होता है। बिना अध्यापक के शिक्षा प्राप्त करना कठिन होता है। अध्यापक ही ऐसा माध्यम है जो अपने छात्रों के ज्ञान चक्षुओं को खोलता है। उन्हें एक जिम्मेदार व सफल व्यक्ति बनाने में शिक्षक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हमारे देश में कई ऐसे बच्चे हैं जो गरीबी के कारण शिक्षा ग्रहण कर पाने में असमर्थ हैं। उन बच्चों को शिक्षा दिलाना व उनका उचित मार्गदर्शन करना अध्यापक के हाथ में ही है। इसके साथ ही ऐसे कई कार्य हैं जो अध्यापक बनकर ही पूरे किए जा सकते हैं। इसीलिए मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि यदि मैं अध्यापक होता तो मैं भी बहुत सारे कार्य करता।

मैं अपने देश से निरक्षरता की जड़ों को उखाड़कर साक्षरता रूपी वृक्ष को सींचने का प्रयत्न करता। मैं अपने सहकर्मियों की मदद से शिक्षा से वंचित ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को शिक्षित कराने के लिए सरकार से मदद की गुहार लगाता। अपने विद्यार्थियों को आदर्श नागरिक बनाकर उनके भविष्य को उज्ज्वल बनाता। इससे हमारे राष्ट्र का विकास होता।

यदि मैं अध्यापक होता तो मैं अपने विद्यार्थियों को भी गरीब बच्चों को शिक्षित करने के लिए प्रेरित करता। मैं अपने विद्यार्थियों को पूरे देश को साक्षर बनाने के मेरे इस अभियान में मेरा सहयोग देने के लिए प्रेरित करता। हम सभी मिलकर जनकल्याण हेतु अनेक कार्य करते। सचमुच यदि मैं अध्यापक होता तो न जाने कितने सारे कार्य करता और अपने देश के विकास में अपना पूरा योगदान देता।

Target Publications